# क्या परमेश्वर है? हां, वरना हम

# समझ तथा विवेक

# की व्याख्या कैसे कर सकते हैं

## समझ

गतिशील चांद उस बनाने वाले की गवाही देता है जो वस्तुओं को गतिशील रखने में समर्थ है और जीवित वस्तुएं भी एक जीवित सृष्टिकर्त्ता की गवाही देती हैं। पदार्थ से श्रेष्ठतर, क्रियाशीलता से श्रेष्ठतर और जीवन से श्रेष्ठतर वास्तविकता का एक और स्तर है जिसे समझ कहते हैं। समझ देने वाले में समझ न होने की बात को स्पष्ट सोच नहीं कहा जा सकता है।

मानवीय समझ जीवन से उतनी ही श्रेष्ठतर है जितना पदार्थ से जीवन। मनुष्य का दिमाग असीम क्षमता के कारण अद्‌भुत है। रूसी विद्वान, आइवन येफ्रिमोव ने लिखा है:

> मानव विज्ञान, मनोविज्ञान, तर्क, शरीर विज्ञान की अन्तिम खोजों से पता चलता है कि इन्सान के दिमाग की क्षमता वास्तव में बहुत अधिक है। आधुनिक विज्ञान द्वारा मनुष्य के दिमाग की संरचना तथा कार्य की कुछ समझ पाकर, हम इसकी विशाल आरक्षित क्षमता से स्तब्ध रह गए थे। कार्य तथा जीवन की औसत परिस्थितियों में मनुष्य अपनी सोच सामग्री का बहुत कम इस्तेमाल करता है। यदि हम अपने दिमाग की क्षमता के केवल आधे भाग का ही इस्तेमाल कर सकें, तो बिना किसी कठिनाई के, हम 40 भाषाएं सीख सकते हैं, विश्वकोष पूरे का पूरा याद कर सकते हैं और दर्जनों कॉलेजों के कोर्स कर सकते हैं।[1]

मनुष्य का मस्तिष्क एक प्राकृतिक कम्प्यूटर की तरह है जिसमें पारस्परिक सम्पर्क बनाए रखने के लिए 14 अरब इकाइयां हैं, और हैरानी की बात यह है कि केवल यही एक ऐसा कम्प्यूटर है जिसे विशेषज्ञ मानते हैं कि इसका निर्माण प्राकृतिक कार्यों में घटनाओं की एक शृंखला के कारण सम्भव हो सका है। फ्रांसीसी दार्शनिक तथा गणितज्ञ बलेज़ पासकल ने लिखा है, ''मनुष्य तो केवल एक सरकंडा ही है जो प्रकृति की सबसे कमजोर वस्तु है... सृष्टि चाहे उसे मार दे, परन्तु मनुष्य फिर भी अपने मारने वाले से भला होगा, क्योंकि वह जानता है कि वह मर जाता है; और सृष्टि को इस लाभ का कि वह उसके ऊपर है, कुछ ज्ञान नहीं। इसलिए सारा श्रेय विचार में ही है।''

इन्सान के दिमाग की इसी क्षमता के कारण चार्ल्स डारविन आस्तिक बना था।

डारविन ने लिखा है कि मनुष्य के दिमाग की ''बहुत पीछे और भावी जीवन में बहुत आगे देखने की अद्‌भुत क्षमता'' ने ही उसे ''पहला कारण जिसे किसी हद तक मनुष्य की तरह ही समझ है'' मानने के लिए बाध्य किया। उसने आगे कहा, ''मुझे एक आस्तिक कहलाने का अधिकार है।'' परन्तु उसका मानना था कि मनुष्य का दिमाग ''छोटे से छोटे जन्तुओं के दिमाग की तरह'' विकसित हुआ है, फिर उसे संदेह हुआ कि ''बड़े निष्कर्ष'' जिन तक मनुष्य पहुंचता है, पर भरोसा किया जा सकता है।[2] इस प्रकार डारविन ने उसे स्वीकार नहीं किया जो उसके दिमाग ने कहा था कि ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने अपने दिमाग को ऐसा कहने में सक्षम नहीं समझा।

दिमाग़ किस चीज़ से बना है ? एक वैज्ञानिक ने इसे तथ्य के रूप में प्रस्तुत किया कि यह ''मूलभूत कणिकाओं'' से बना है (क्या इसका अर्थ है मूल) जिसमें ''घटिया किस्म और दुर्बल तीव्रता'' की ''मानसिक विशेषताएं'' हैं। डारविन ने कहा था कि ऐसी विशेषताओं का अनुमान लगाना पड़ता है, वरना ''मुझे यह समझ नहीं आ सकता कि चेतना पदार्थ की कोई प्रणाली कैसे बन गई।''[3] एक और अनुमान लगाया जाता है कि चेतना ''कच्चे पूर्व-ऐतिहासिक बायोलुमिनिसेन्स (अर्थात, एक विकासवादी चिंगारी का) सुधरा हुआ वंशज है।'' ऐसी भाषा प्रभावित तो कर सकती है, परन्तु इससे खोजी मन को कोई उत्तर नहीं मिलता है।

खोजी मन को रेने डेस्कार्टेस (1596-1650) के शब्दों में कुछ उत्तर मिल जाता है: ''अन्त में मेरे अस्तित्व का कोई भी कारण हो, यह मान लेना चाहिए कि यह भी विचारवान वस्तु है।''[4] डेस्कार्टेस ने आगे कहा यदि रचना विचारवान वस्तु है, तो निश्चय ही उसका रचयिता भी वैसा ही हो सकता है। ''प्रभाव की तरह कारण में भी कम से कम उतनी वास्तविकता तो होनी ही चाहिए।''[5] डेस्कार्टेस से भी आगे एक आधुनिक विचारक ने लिखा है कि मनुष्य की समझ तथा व्यक्तित्व उसके बनाने वाले की ''समझ तथा व्यक्तित्व को प्रकट करते हैं।''[6] यह कहना कि मनुष्य परमेश्वर के बारे में सचेत हो सकता है परन्तु परमेश्वर उसके बारे में नहीं, तर्कसंगत नहीं है। चेतना देने वाला अचेत नहीं हो सकता। कम से कम मानवीय चेतना तथा व्यक्तित्व में परमेश्वर के व्यक्ति होने की गवाही तो है ही।

## विवेक

गतिशील चांद से यह पता नहीं चलता कि परमेश्वर जीवित है, परन्तु एक पेड़ से पता चलता है। पेड़ से यह पता नहीं चलता कि परमेश्वर एक व्यक्ति है, परन्तु मनुष्य के व्यक्तित्व से ऐसा पता चलता है। इसी प्रकार विवेक तथा कर्त्तव्य के बारे में मनुष्य की समझ दिखाती है कि परमेश्वर महत्व देने वाला जीव है। दूसरों को नैतिक मूल्य देने वाले के स्वयं एक सदाचारी या नैतिक व्यक्तित्व न होना सम्भव नहीं है।

मनुष्य का नैतिक स्वभाव पशुओं में नहीं मिलता है। मानवीय जीव अपने जीवनों पर योग्य दावे ''अर्थात एक अलौकिक मांग जो अधिकारपूर्ण और निष्पक्ष है''[7] करने के बारे में सचेत होते हैं। यदि एक चिम्पेंज़ी बोल पाता तो उसने कहना था, ''मुझे आवश्यकता है''

परन्तु मनुष्य कहता है, ''मुझे चाहिए।''

अविश्वासी थॉमस एच. हक्सले ने (1825–1895) अपने पुत्र की मृत्यु के कारण ''सच्चाई को नकारने'' पर अनश्वरता में सुख पाने से इन्कार कर दिया था।[8] परन्तु, यदि हक्सले केवल आदिकाल से धीरे–धीरे क्षीण हो रहे मनुष्य की संतान होता जैसे उसकी मान्यता थी, तो सच और झूठ में क्या अन्तर रह जाता है ? स्पष्टत: हक्सले की ईमानदारी की भावना ने सच्चाई के प्रति उसकी मिट्टी की देह में से कुछ नहीं निकाला। ईमानदारी एक ऐसा गुण है जिसकी समझ रसायनों की थैली को कदापि नहीं है। यह मानना कि जिसने मनुष्य में नैतिकता की भावना को डाला, वह स्वयं अनैतिक होगा असंगत है।

बर्टरेण्ड रस्सल (1872–1970) ने भलाई तथा बुराई की मनुष्य की आंतरिक सूक्ष्म दृष्टि को समझा, परन्तु उसका मानना था कि जिस शक्ति ने मनुष्य में वह सूक्ष्म दृष्टि डाली उसमें सोचने की योग्यता नहीं थी। ''एक अजब रहस्य यह है कि प्रकृति, जो सर्वव्यापी है परन्तु अन्धी है, ... ने अन्त में एक ऐसे बालक को जन्म दिया, जिसे भलाई और बुराई के ज्ञान से, अपनी विचार शून्य मां के सभी कामों का न्याय करने की समझ थी।''[9] उसके अनुसार, अज्ञात वंशावली की अन्धी बुद्धिहीन मां ऐसे बालक को जन्म देती है जो देख सकता है, सोच सकता है और सदाचारी है।

इमानुएल कैन्ट ने आकाश और नैतिक नियम की व्याख्या देकर बहुत से लोगों को प्रभावित किया था। ''तारों से भरे आकाश के बिना और नैतिक नियम की दो बातों को और गम्भीरता से देखकर मैं उनकी प्रशन्सा करता और मेरा भय बढ़ रहा है ।'' कैन्ट ने मनुष्य के ''चाहिए'' के स्पष्ट आदेशसूचक को इतना महत्वपूर्ण माना कि उसने इसे परमेश्वर के होने का एक प्रमाण बना दिया। परमेश्वर के अस्तित्व के उत्कृष्ट तर्कों की घोर आलोचना करने के बावजूद वह इस बात पर स्थिर रहा कि मनुष्य की नैतिक भलाई, और उससे मिलने वाली उसकी प्रसन्नता की पूर्णता के लिए, ''इस प्रभाव के लिए पर्याप्त कारण, समझ (एक विवेकी जीव) जो सर्वश्रेष्ठ समझ का होना'' आवश्यक है।[10]

वह उसके अस्तित्व को इतनी दृढ़ता से देख पाया, कि उसने मानसिक धारणाओं के लिए बोध के संसार से आगे देखकर करने के कारण का तर्क इस्तेमाल करने वालों की तरह वही बात की जिसका आरोप उसने उन पर लगाया था। परन्तु, लगता है कि कारण का तर्क देने वाले भावना के संसार से पहले संसार के बनाने वाले को देखने में ''सत्ताशास्त्र के भ्रम'' के प्रति समर्पित नहीं हैं और न ही कैन्ट था जब उसने बोध के संसार से आगे निकलकर उस जीव को देखा जो मनुष्य की भौतिक प्रसन्नता के लिए आवश्यक है। उस जीव के साथ, कैन्ट ने आनन्द विभोर होकर उसे ''व्यवस्था देने वाला जो पवित्र है,'' ''धर्मी न्यायी'' और ''अच्छा हाकिम'' कहा।[11]

एरिक फ्रैंक यह मानते हुए कि उसमें एक ''नैतिक अन्तरदृष्टि'' थी, कह रहा था, गुण में कितनी विभिन्नता है और यह कितना दयनीय है, परन्तु अपने आप को वह ''पूर्ण बौद्धिक चुनौती'' की स्थिति में रख रहा था। उसका ऐलान था, ''मैं मूलभूत सिद्धांत का पूरी तरह से विरोध करूंगा और इसे नहीं मानूंगा।''[12]

शायद दूसरे सभी लोगों से हटकर, कैंट का मानना है कि मनुष्य में पाई जाने वाली सामर्थ तथा शुभ इच्छा के महत्व, मनुष्य जाति की सहायता के लिए स्पष्ट आदेश, लोगों का हमेशा सिद्धांतों पर काम करना, विश्वव्यापी ही होना चाहिए। निजी तौर पर, वह अवश्य ही संसार का सब से बढ़िया मनुष्य होगा। परन्तु, मूल्यों के उसके उच्च तथा पूरी तरह नि:स्वार्थ भाव में ''कमजोर, चिपचिपे तत्व,'' ''धड़कने वाले कचरे,'' या आदिकाल से क्षीण होने की कोई व्याख्या नहीं है।

यदि तत्व/पदार्थ में भलाई, करुणा और प्रेम बन भी जाते तो भी एक तथाकथित विकासवादी संसार में जहां, क्रूरतापूर्वक ज़ोर ज़बरदस्ती से सामर्थी ही जीवित रह सकता है, इसके लिए स्थान नहीं होगा। केवल एक ही व्याख्या है जिसका कुछ अर्थ हो सकता है और वह यह है कि किसी जीव ने जो महत्व का अर्थ जानता है, कैंट के मन में भी वही भावना डाली। इसका अर्थ यह हुआ कि जैसे रात के बाद प्रकाश ही होता है, वैसे ही संसार का सृष्टिकर्त्ता किसी भवन निर्माता से बढ़कर है अर्थात वह जीवित है, बुद्धिमान है और भला है।

## वह किस प्रकार का परमेश्वर है?

''क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है'' (अय्यूब 11:7)। सुनिश्चित रूप में, इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक होगा, क्योंकि परमेश्वर ''तो ऐसे बड़े काम करता है जिनकी थाह नहीं लगती, और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जाते'' (अय्यूब 5:9)। परन्तु, फूलों के बाग में चलते हुए, यदि माली न भी दिखाई दे, तो भी माली के बारे में निश्चित बातों का अवश्य पता चल जाता है। उसी प्रकार, कोई भी सामान्य व्यक्ति दिन में या रात में आकाश की ओर टकटकी लगाकर देखे तो उसे उस सामर्थी सृष्टिकर्त्ता और इन्हें बनाने वाले की कारीगरी ही दिखाई देती है (देखिए भजन 19:1-3)।

निर्जीव पदार्थ की सृष्टि में, एक या अधिक शक्तिशाली सृष्टिकर्त्ताओं को देखा जा सकता है। ग्रहों की गति को सही दिशा देते नियमों की स्पष्ट एकता से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सृष्टिकर्त्ता केवल एक ही है, यद्यपि उसके असंख्य सहायक हों, परन्तु सब को निर्देश वही देता है। फिर, यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत है कि जीवन के हर रूप के रचयिता में अपने आप में भी जीवन होना आवश्यक है। यदि जीवित प्राणी एक आत्मज्ञानी विशिष्ट व्यक्ति है, तो कोई कह सकता है कि उसका सृष्टिकर्त्ता भी अपनी सृष्टि से कम नहीं है। इसी प्रकार, यदि आत्मज्ञानी विशिष्ट व्यक्ति में नैतिक संवेदनशीलता है, तो यह सोचना असंगत है कि उसके बनाने वाले में उससे कम संवेदना होगी। एक-एक करके, वास्तविकता के एक स्तर से दूसरे तक, व्यक्ति को सृष्टिकर्त्ता की समझ आती है जिसे उसने कभी नहीं देखा परन्तु उसके बारे में और जानने की लालसा है।

परमेश्वर को केवल प्रेम और शुद्ध आत्मिकता अर्थात एक अमूर्त आदर्श (प्लेटो) या एक बूढ़ा दाढ़ी वाला आदमी या मनुष्य की सृष्टि (ज़ीनोफेन्ज़) या मनुष्य के दिमाग की उपज (लुड्विग फ्युरबैक) या इच्छापूर्ण सोच (सिगमंड फ्रायड) या मृत (फ्रेड्रिच नेयल्ज़्श)

या केवल हमारे अस्तित्व का आधार (पॉल टिलिच) या ऐसा जिसे हमारी निर्बलताओं की भावनाओं से छुआ नहीं जा सकता, कहने वाले व्यक्ति ने पूरे प्रमाण पर विचार नहीं किया। ''जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता? जिसने आंख रची, क्या वह आप नहीं देखता?'' (भजन 94:9)। जिसने इन्सान को संवेदनशील भावनाएं दीं, क्या उसमें ऐसी भावनाएं नहीं हैं?

---

पाद टिप्पणियां

[1]इवान येफ्रोमोव, ''द ह्यूमन ब्रेन गॉड मेड,'' *ट्वंटियथ सेन्चुरी क्रिश्चियन* (अगस्त 1970): 8. [2]फ्रांसिस डार्विन, सं., *लाइफ एण्ड लेटर्स ऑफ़ चार्ल्स डार्विन* (न्यूयॉर्क: डी. एपलटन एण्ड कं., 1911), 1:282. [3]डी. एफ़. लॉडन, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैंटरबरी ऐट क्राइस्टचर्च, न्यूज़ीलैण्ड: जॉन लियर, ''द फ्यूचर ऑफ़ गॉड,'' *सेटर्डे रिव्यू* (29 अगस्त 1964): 184 में उद्धृत। [4]रेने डिस्कार्टेस, *डिस्कार्टेस सिलेक्शन्स,* सं. राल्फ एम. ईटन (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1927), 123. [5]वहीं। [6]*द इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना,* 1962 सं., S.V. एच. डब्ल्यू. राइट की ''थीयिज़्म।'' [7]जॉन हिक्कल, *क्लासिकल एण्ड कंटेम्परेरी रीडिंग्स इन द फिलॉसफ़ी ऑफ़ रिलिजन* (एंगलवुड क्लिफस, न्यू ज.: प्रैंटिसहॉल, 1965), 471. [8]डेविड एल्टन ट्रूब्लड, *फिलॉसफ़ी ऑफ़ रिलिजन* (न्यूयॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1957), 108. [9]बर्टैरैण्ड रसल, *मिस्टिसिज़्म एण्ड लॉजिक* (न्यूयॉर्क: बार्नस एण्ड नोब्बल, 1959), 48. [10]*कैंट सिलेक्शन्स,* सं. थियोडोर मेयर ग्रीन (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1957), 360-67 में इम्मानुएल कैंट, ''थ्योरी ऑफ़ ईथिक्स।''

[11]वहीं, 367. [12]गैडिस मैक्गरेगर, इंटरोडक्शन टू रिलिजियस फिलॉसफी (बोस्टन: ह्यूग्टन मिफलिन कं., 1959), 120.